ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

दहेज प्रथा और हरिशंकर परसाई के साहित्य में सामाजिक व्यंग्य: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

शोधार्थी: चित्रार्धनी पटेल, हिंदी विभाग
संस्थान: इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक (मध्य प्रदेश)
ईमेल: chitra221995@gmail.com

१. शोध सार (Abstract)

प्रस्तुत शोध-पत्र हिंदी के महान व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई के साहित्य में व्याप्त 'दहेज प्रथा' के विरुद्ध प्रहारों का विश्लेषण करता है। परसाई जी ने अपनी पैनी दृष्टि से यह सिद्ध किया कि दहेज केवल एक कुप्रथा नहीं, बल्कि मध्यवर्गीय पाखंड, पूँजीवादी मानसिकता और पितृसत्तात्मक अहंकार का मिश्रण है। 'निठल्ले की डायरी', 'बारात की वापसी' और 'सदाचार का ताबीज' जैसी रचनाओं के माध्यम से उन्होंने विवाह के नाम पर होने वाली 'इंसानी सौदेबाजी' को बेनकाब किया है। यह शोध पत्र परसाई के व्यंग्य की प्रासंगिकता को वर्तमान संदर्भ में परखने का प्रयास करता है।

२. प्रस्तावना

हरिशंकर परसाई हिंदी साहित्य के वे शिखर पुरुष हैं जिन्होंने व्यंग्य को केवल हास्य तक सीमित न रखकर उसे समाज की विद्रूपताओं के विरुद्ध एक सशक्त अस्त्र बनाया। दहेज प्रथा पर परसाई का दृष्टिकोण अत्यंत स्पष्ट और मारक है। उनके लिए दहेज कोई व्यक्तिगत समस्या नहीं, बल्कि एक व्यवस्थित 'संस्थागत भ्रष्टाचार' है। परसाई जी ने दिखाया कि कैसे एक पिता अपने बेटे की शिक्षा पर किए गए निवेश को विवाह के मंडप में 'वसूली' के रूप में देखता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

३. 'निठल्ले की डायरी' में मध्यवर्गीय खोखलापन

'निठल्ले की डायरी' के माध्यम से परसाई जी ने दिखाया कि समाज के तथाकथित 'सभ्य' लोग भीतर से कितने लालची हैं।

शिक्षा का वस्तुकरण: परसाई लिखते हैं कि डिग्री का महत्व ज्ञान अर्जन के लिए नहीं, बल्कि शादी के बाजार में वर का 'भाव' बढ़ाने के लिए होता है।

सामाजिक पाखंड: डायरी का निठल्ला पात्र उन लोगों को देखता है जो मंच पर दहेज विरोधी भाषण देते हैं और घर आकर दहेज की वस्तुओं की गुणवत्ता जांचते हैं। परसाई का व्यंग्य यहाँ तीखा हो जाता है– "नैतिकता का उपदेश देना सस्ता है, लेकिन बिना दहेज की शादी करना महँगा।"

४. 'बारात की वापसी' और दहेज का हिंसक चरित्र

परसाई जी ने 'बारात की वापसी' में विवाह उत्सव को एक 'रणक्षेत्र' की तरह चित्रित किया है।

बारात एक हमलावर सेना: वे लिखते हैं कि बाराती इस भाव से कन्या पक्ष के यहाँ जाते हैं जैसे वे किसी दुश्मन को हराने आए हों।

शक्ति का प्रदर्शन: दहेज की मांग पूरी न होने पर लड़की के पिता का जो मानमर्दन किया जाता है, वह वास्तव में पुरुष प्रधान समाज का अहंकार है। परसाई जी इसे एक 'सभ्य समाज का कलंक' मानते हैं।

५. 'सदाचार का ताबीज' और दहेज का अंतर्संबंध

एक शोधार्थी के रूप में यह खंड महत्वपूर्ण है। परसाई जी ने भ्रष्टाचार (Corruption) और दहेज को एक ही सिक्के के दो पहलू बताया है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

दहेज: भ्रष्टाचार की जननी: एक सरकारी कर्मचारी अपनी बेटी के दहेज के लिए ही रिश्वत लेने को मजबूर होता है।

वैध भ्रष्टाचार: समाज चोरी को पाप मानता है लेकिन 'मोटे दहेज' को गर्व का विषय। परसाई के अनुसार, जब तक समाज में पैसे से इज्जत खरीदी जाएगी, तब तक दहेज का 'ताबीज' काम नहीं करेगा।

६. वर्तमान संदर्भ एवं शोध निष्कर्ष

वर्तमान में दहेज ने 'उपहार' (Gifts) और 'स्टेटस सिंबल' का रूप ले लिया है। परसाई का साहित्य हमें चेतावनी देता है कि जब तक युवा स्वयं को 'बाजारू माल' बनना बंद नहीं करेंगे, तब तक कानून इसे नहीं रोक सकता।

निष्कर्ष के मुख्य बिंदु:

• दहेज प्रथा पूँजीवादी लालच का घरेलू संस्करण है।

• शिक्षा ने दहेज को खत्म करने के बजाय इसे और अधिक 'महिमामंडित' (Sophisticated) बना दिया है।

• परसाई जी का समाधान 'वैचारिक विद्रोह' और 'सामूहिक बहिष्कार' में निहित है।

७. संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

परसाई, हरिशंकर. निठल्ले की डायरी. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

परसाई, हरिशंकर. परसाई रचनावली (खंड १-६). राजकमल प्रकाशन।

परसाई, हरिशंकर. बारात की वापसी. भारतीय ज्ञानपीठ।

डॉ. रामविलास शर्मा. भारतीय समाज और हिंदी साहित्य।